



ड्रेगन फ्रूट की उन्नत खेती

विजय कुमार कुशवाहा¹ प्रशान्त कुमार त्रिपाठी² विज्ञा मिश्रा³

¹आनुवांशिक एवं पादप प्रजनन विभाग, बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा (उत्तर प्रदेश)

²सब्जी विज्ञान विभाग, बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा (उत्तर प्रदेश)

³फसलोत्तर प्रौद्योगिकी विभाग उद्यान महाविद्यालय, बाँदा (उत्तर प्रदेश)

Email: vijaykumarkushwa87ha@gmail.com

Received: May, 2023; Revised: May, 2023 Accepted: June, 2023

परिचय

ड्रेगन फ्रूट को हिन्दी में पिताया या स्ट्राबेरी पीयर के नाम से भी जाना जाता है। इसका वानस्पतिक नाम हाइलोसीरियस स्पीसीज है। यह कैक्टेसी परिवार का पौधा है जिसकी विभिन्न प्रजातिया पायी जाती हैं। जिसकी उत्पत्ति दक्षिण अमेरिका तथा उत्तरी-दक्षिण अमेरिका में मानी गयी है। ड्रेगन फ्रूट एक दीर्घदिवसीय तथा बहुवर्षीय पौधा है। इसका एक पौधा 20 वर्ष की आयु तक फल दे सकता है। कृत्रिम परिस्थितियों में यह पौधा वर्ष भर फल

उत्पादन कर सकता है ड्रेगन फ्रूट को औषधीय पौधा भी माना गया है। जिसका उपयोग एशियाई देशों में परम्परागत चिकित्सा में किया जाता रहा है।

विभिन्न आकर, प्रकार और रंग में पाए जाते हैं -

1. सफेद गूदा एवं गुलाबी छिलके वाली प्रजाति।
2. लाल या गुलाबी गूदा के साथ गुलाबी छिलके वाली प्रजाति।

3. बैगनी गूदा के साथ गुलाबी छिलके वाली प्रजाति।



4. सफेद गूदा के साथ पीला छिलके वाली प्रजाति।



ड्रैगन फ्रूट के स्वास्थ्य वर्धक गुण:

ड्रैगन फ्रूट में पाए जाने वाले बायोएक्टिव यौगिक एवं प्राकृतिक एंटीऑक्सीडेंट्स हमारे स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त लाभकारी हैं। इसके तने, फूल, छिलका, गुदा इत्यादि के अर्क से जीवाणु जनित रोगों के साथ-साथ मधुमेह, मोटापा, हाइपरलिपिडेमिया, कैंसर आदि जैसी बीमारियों से बचा जा सकता है। इसके गूदे में 80 प्रतिशत नमी, 0.4 -2.2 प्रतिशत प्रोटीन, 8.5 से 13.0 प्रतिशत

कार्बोहाइड्रेट एवं 6 प्रतिशत शर्करा पायी जाती है। इसके अलावा यह फल मैग्नेशियम, पोटैशियम तथा आवश्यक वसा अम्लों लिनोलेइक, लिनोलेनिक एसिड, पामिटिक एवं ओलेइक एसिड का भी महत्वपूर्ण स्रोत है। साथ ही साथ बीटालेस, फ्लैवेनॉइड्स, पॉलीफिनॉल्स, टर्पीनाइड्स, सैपोनिन्स, टैनिन्स एवं कैरोटिनायड्स, जैसे बायोएक्टिव, यौगिक भी इस फल में उचित मात्रा में पाए जाते हैं।

ड्रैगन फ्रूट के फायदे

1. कोलेस्ट्रॉल पर नियंत्रण करता है और एन्टीआक्सीडेंट्स का महत्वपूर्ण स्रोत होने के कारण कैंसर एवं दिल की बीमारियों से बचाव करता है।
2. पेट सम्बन्धी समस्याओं को दूर करता है।
3. त्वचा के लिए लाभदायक होता है।

4. गठिया एवं माँसपेशियों के लिए फायदेमंद है।

5. बालों की सुन्दरता बढ़ाता है।

ड्रैगन फ्रूट एंटीऑक्सीडेंट्स के साथ-साथ पोषक तत्व मुख्यतः विटामिन एवं खनिज लवण का भी महत्वपूर्ण स्रोत हैं (सारणी 1)।

सारणी-1: ड्रैगन फ्रूट में पाए जाने वाले पोषक तत्व

क्रं सं	तत्व	मात्रा (प्रति 100 ग्राम गूदा)
1	प्रोटीन	2 ग्राम
2	शर्करा	13 ग्राम
3	वसा	0 ग्राम
4	कैलोरी	102 ग्राम
5	फाइबर	5 ग्राम
6	कार्बोहाइड्रेट	22 ग्राम
7	विटामिन ए	100 मिलि ग्राम
8	विटामिन सी	4 मिलि ग्राम

9	आयरन	0.1 मिलि ग्राम
10	कैल्सियम	31 मिलि ग्राम
11	मैगनीशियम	68 मिलि ग्राम

ड्रैगन फ्रूट की खेती:

जलवायु- ड्रैगन फ्रूट एक उष्णकटिबन्धी पौधा है अर्थात पौधे के उचित विकास, फलों के निर्माण एवं वृद्धि के लिए शुष्क जलवायु आवश्यक होती है। इसके उचित विकास के लिए 50 से 80 सेमी औसत वर्षा तथा 25 से 35 डिग्री सेल्सियस तापमान आदर्श पाया गया है।

खेत की तैयारी: ड्रैगन फ्रूट की खेत के लिए भूमि को अच्छी प्रकार से जोत कर समतल बनाया जाता है। ताकि सारे खरपतवार नष्ट हो जायें। जुताई करने के बाद भूमि में जैविक कम्पोस्ट तथा 50-60 कुन्तल सड़ी हुई गोबर की खाद अच्छी तरह से मिलना चाहिए। इसके साथ ही साथ फास्फोरस और पोटाश को भी मिट्टी में उचित मात्रा में मिलाया जाता है।

ड्रैगन फ्रूट की बुवाई: उचित प्रकार से खेत को तैयार करने के बाद 3×3 मीटर में 60×60×60 सेमी के गड्ढे मई के महीने में खोद कर छोड़ देने चाहिए ताकि अच्छी तरह धूप लग जाये और कीड़े मकोड़े, खरपतवार और मृदा जनित रोग आदि नष्ट हो जायें। इसकी बुवाई के लिए बीज और कटिंग का प्रयोग करते हैं। बीए गए से बोई गयी पौधे फल देने में अधिक समय लेते है। अतः कटिंग का प्रयोग किसानों के लिए अधिक लाभदायक होता है।

ड्रैगन फ्रूट का अलैंगिक प्रसारक कलम (कटिंग) लेने के लिए स्वस्थ एवं गुणवत्ता युक्त पौधे का चुनाव करना चाहिए। लगभग 20 -25 सेमी लम्बी कलमों सेम्पल का प्रयोग रोपाई में करना चाहिए। रोपाई से पहले 5 से 7 दिन के लिए इन्हे छायादार स्थान पर रखना चाहिए। कलम को गोबर, मिट्टी, बालू के 1: 1: 2 अनुपात में मिला कर रुपाई करनी चाहिए। इन्हें गड्ढों में रोपने के बाद मिट्टी के साथ -साथ 100 से 200 ग्राम सुपर फास्फेट भी डालना चाहिए। इस प्रकार से तैयार एक एकड़ खेत में लगभग 1600 से 1800 पौधे लगाये जाने चाहिए। सामान्यतः ड्रैगन फ्रूट के पौधे जून-जुलाई या फरवरी-मार्च में लगाये जाते हैं पर अधिक वर्षा एम ठण्डे क्षेत्रों में सितम्बर या मार्च में लगाए जाने चाहिए। जब तक पौधा पनपने न लगे तब तक रोज शाम को हल्की सिंचाई करनी चाहिए।

सहारा देना: पौधे की उचित वृद्धि के लिए कंकरीट या लकड़ी के स्तम्भों से सहारा देना चाहिए। इन स्तम्भों से अंकुर 2 से 3 मुख्य तनों को बढ़ने देना चाहिए।



सिंचाई: इसकी सिंचाई के लिए टपक विधि उत्तम रहती है क्योंकि इस फसल को कम पानी की आवश्यकता होती है तथा इसमें जल निकास का उचित प्रबंधन करना चाहिए। गर्मी के मौसम में आवश्यकतानुसार सिंचाई का प्रबंधन करना चाहिए।

खाद एवं उर्वरक: ड्रैगन फ्रूट की वृद्धि एवं विकास में कार्बनिक पदार्थों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है प्रत्येक पौधे को प्रति वर्ष 10 से 15 किग्रा जैविक खाद की आवश्यकता होती है। तथा प्रति वर्ष 2 किलोग्राम जैविक खाद की मात्रा बढ़ा कर देनी चाहिए। वानस्पतिक वृद्धि के लिए पोटाश:सुपरफास्फेट:यूरिया 50:80:60 ग्राम के अनुपात से प्रति पौधा देना चाहिए। तथा फल लगने के समय पर नाइट्रोजन कम एवं पोटाश अधिक मात्रा में देना चाहिए। जिससे उपज बेहतर एवं गुणवत्ता युक्त प्राप्त हो। पुष्पन से लेकर फलन तक निम्न अनुपात में रासायनिक खाद देनी चाहिए। यूरिया: सुपरफास्फेट: पोटाश 60:40:100 ग्राम रासायनिक खाद प्रति पौधे को प्रति वर्ष 200 ग्राम बढ़ाकर देनी चाहिए।

पुष्पन एवं फलन: पौधों में मई से जून के माह में फूल आते हैं। अगस्त से दिसम्बर तक फल आने लगते हैं। पुष्पन के एक महीने बाद ड्रैगन फ्रूटों की तोड़ाई करते हैं। कच्चे फल प्रायः गहरे हरे रंग के जबकि पकने पर लाल रंग के दिखते हैं।

कटाई सफाई और ग्रेडिंग के तरीके

फलों की तुड़ाई: फलों की तुड़ाई करने के लिए उचित समय का चुनाव करना चाहिए। आम तौर पर फलों की तुड़ाई फूल आने के 30.35 दिनों के बाद की जाती है। फलों का रंग जब तीन चौथाई परिवर्तित हो जाये या फलों

के रंग बदलने के 3 से 4 दिनों के अंदर उनकी तुड़ाई करनी चाहिए।

फलों की सफाई एवं श्रेणीकरण: वर्तमान में ये क्रियाएं मैनुअल रूप से पूरा किया जाता है। फलों की कीमतें फलों के आकार रंग और वजन के आधार पर ग्रेड; ग्रेड ए, बी, सी, अलग-अलग द्वारा निर्धारित की जाती हैं।

कीट एवं रोग: सामान्यतः ड्रैगन फ्रूट रोगों के प्रति सहनशील होता है। जबकि कुछ कीड़े मकौड़े, जो कि अनकूल मौसम एवं अनुचित प्रबंधन से हानि पहुंचाते हैं। जैसे - एन्थ्रेकनोज, भूरे धब्बे और फल एवं तना सड़न रोग और बीटल, चीटियाँ, स्केल और चिड़ियाँ इत्यादि।

उपज एवं लाभ: ड्रैगन फ्रूट का पौधा एक मौसम में 4 से 5 बार फल देता है। एक एकड़ में लगभग 2 से 4 हजार पौधे आते हैं तथा एक बार पौधे लगाने के बाद 20 से 25 साल फल देते रहते हैं। ड्रैगन फ्रूट के साथ अन्तःसस्यन खेती भी की जा सकती है। जिससे अतिरिक्त लाभ प्राप्त किया जा सकता है। प्रथम वर्ष 5 कुन्तल प्रति एकड़ दूसरे वर्ष 60 से 70 कुन्तल तथा तीसरे वर्ष 100 से 150 कुन्तल तथा चौथे वर्ष 150 से 200 कुन्तल प्रति एकड़ तक उत्पादन होता है। आमतौर पर यह 20000रु प्रति कुन्तल बिकता है। एक एकड़ में लगभग 5 से 7 लाख लागत आती है। जबकि उत्पादन लगभग तीसरे वर्ष में 25 लाख प्रति एकड़ के हिसाब से होता है। जबकि शुद्ध लाभ 18 से 22 लाख रुपये तक प्राप्त किया जा सकता है।

विपणन

भारत में ड्रैगन फ्रूट का सुनिश्चित बाजार है तथा वाणिज्यिक उत्पादकों की सीमित संख्या और उच्च मांग के कारण में ड्रैगन फ्रूट की बिक्री बहुत अधिक होने की उम्मीद है। जहां तक बाजार का संबंध है वर्तमान में भारत में और सीमित संख्या के कारण बहुत अधिक शिखर तक पहुंचने की उम्मीद है। मुख्य रूप से इसके

स्वाद एवं पोषण और औषधीय गुण के भविष्य में भी इसकी मांग बढ़ने की संभावना है। भारतीय खुदरा बाजार में ड्रैगन फ्रूट को अक्सर ताजा उत्पाद के रूप में बेचा जाता है। बाजार में वजन के आधार पर ड्रैगन फ्रूट के तीन ग्रेड; ए, 400 ग्राम, बी 200-400 ग्राम और सी 200 ग्राम



के बीच प्रचलित हैं जिनका मुल्य रुपये 55–250 ध्
किग्रा तक है। भारतीय बाजार में ऑफ.सीजन के दौरान
ड्रैगन फ्रूट का मुल्य रुपये 300.450 ध्किग्रा के तक बढ़
जाता है। यहां तक कि शहरों में बड़ी संख्या में स्वास्थ्य के

प्रति जागरूक भारतीय उपभोक्ताए वियतनाम और
थाईलैंड से आयातित ड्रैगन फ्रूट के लिए रुपये
500–600 ध्किग्रा तक का भुगतान कर रहे हैं।